P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-7* (Part-2) March- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

पत्रकारिता में प्रगतिवादी दृष्टिकोण के हिमायती– हेतु भारद्वाज – एक परिचय

अशोक धवन
शोधार्थी,
हिन्दी विभाग,
सम्राट पृथ्वीराज चौहान
राजकीय महाविद्यालय,
अजमेर, राजस्थान, भारत

सारांश

दर्शन में जो द्वन्द्वात्मक भौतिक विकासवाद है वहीं राजनीति में साम्यवाद हैं, वही साहित्य में प्रगतिवादी साहित्य है तथा पत्रकारिता में मार्क्सवादी विचारधारा का प्रतिफल है, मार्क्सवादी विचारधारा के प्रवर्त्तक कार्लमार्क्स ने जर्मन दार्शनिक हीगेल के साथ मिलकर जो सिद्धान्त दिये–वे मार्क्सवाद नाम से जाने गये है। मार्क्स ने तथा आधुनिक प्रगतिशील विद्धानों ने साहित्य तथा पत्रकारिता का एकमात्र् लक्ष्य–समाज में शोषित सर्वहारा वर्ग के प्रति नवीन संवेदना और सहानुभूति जाग्रत–करना माना है। इसी कारण वरिष्ठ तथा विशिष्ट हिन्दी पत्रकार हेतु भारद्धाज का भी मानना रहा कि प्रत्येक भाषा का साहित्य तथा पत्रकारिता शोषितों के प्रति समाज का ध्यान आकृष्ट करे तथा उन्हें समाज में उचित सम्मान की प्राप्ति करवानें में सहायक बने।

मुख्य शब्द : राजनीति, पत्रकारिता, साहित्य।

प्रस्तावना

समाज साहित्य का प्रतिबिम्ब होता है जिस प्रकार प्रतिबिम्ब व्यक्ति के वास्तविक स्वरूप का उद्घाटन करता है, वैसे ही साहित्य समाज के उन सभी विद्रूप चित्रों को अंकित करता है जो साहित्यकार के आस–पास दिखाई पड़ते है वैसे ही एक ईमानदार पत्रकार भी तत्कालीन समय, समाज तथा समाज के उपेक्षितों को अपनी लेखनी का विषय बनाता है।

''प्रगति'' शब्द अंग्रेजी शब्द प्रोग्रेस का रूपान्तर माना जाता है जिसका अर्थ है 'आगे बढ़ना या 'उन्नति करना। प्रगतिवाद में गतिशीलता, परिवर्तनकारिता के साथ उपयोगितावादिता भी मिलती है इसका सम्यक अर्थ है – मनुष्य की बौद्धिकता, जीवन को आगे बढ़ाना। प्रगतिवादी विचारधारा कार्लमार्क्स के विचारों से प्रभावित है, दर्शन में इसे मार्क्सवाद, राजनीति में साम्यवाद तथा हिन्दी में प्रगतिवाद कहा गया है, यह जीवन के प्रति वैज्ञानिक दृष्टिकोण को उत्पन्न करता है, यह उन अलौकिक या अद्श्य शक्तियों को जो मानव का पतन करती है– भले ही वो अवधारणा ईश्वर, स्वर्ग–नरक या पाप–पुण्य की रही हो, उसका कठोर शब्दों में विरोध करता है इसका उद्देश्य पूँजीवाद, साम्राज्यवाद, सामन्तवाद आदि सभी प्रतिक्रियावादी तत्वों से सम्बद्ध सामाजिक, राजनीतिक, नैतिक, धार्मिक तथा साहित्यिक रूढ़ियों का विरोध कर एक ऐसे समाज की स्थापना करना रहा, जिसमें सबको समान उन्नति करने, समान सुख–सुविधाऐं प्राप्त करने का समान अधिकार प्राप्त हों। प्रगतिवाद का सार्वजनिक उद्भव भारतीय हिन्दी समाज में 1935 में लखनऊ के ' प्रगतिशील लेखक संघ के अधिवेशन में हुआ।

मुंशी प्रेमचन्द
सुमित्रानन्दन पन्त
सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला
नरेन्द्र शर्मा
शिवमंगल सिंह सुमन

प्रसिद्ध प्रगतिवादी व्यक्तित्व

रांगेय राघव
नागार्जुन
दिनकर
केदारनाथ अग्रवाल

मुक्तिबोध
शमशेर
रामविलास शर्मा

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य पत्रकारिता में प्रगतिवादी दृष्टिकोण के लेखक हेतु भारद्वाज के योगदान का अध्ययन करना है।

1938 में सुमित्रानन्दन पन्त और नरेन्द्र शर्मा ने हिन्दी साहित्य को इन नवीन प्रगतिवादी मूल्यों से जोड़ने के हेतु ''रूपाभ''– नामक मासिक पत्रिका का

प्रारम्भ किया, पन्त ने 1938 की रूपाभ पत्रिका के सम्पादकीय में इसी तथ्य को उकेरा है :–

''इस युग की कविता सपनों में नहीं मिल सकती, इसकी जड़ों को पोषण सामग्री धारण करने के लिए कठोर धरती का आश्रय लेना पड़ रहा है।''

एक पत्रकार समाज तथा राष्ट्र की मानसिकता को अपने मन–मस्तिष्क में रखकर ही सोचता है, उस पत्रकार के व्यक्तिव का निर्माण समाज द्वारा ही होता है। प्रसिद्ध पत्रकार राबर्ट ब्रिफाल्ट ने कहा हैं कि '' यह व्यक्ति नहीं है जिसने प्रथम बार में ही समाज का निर्माण किया, वरन् वह समाज है जिसने व्यक्ति की सृष्टि की है, प्रत्येक मानव–प्राणी का मन उस समाज तथा उस समय का प्रतिफल है, जिसमें वह उत्पन्न हुआ है तथा जिस युग में वह रहता है।''

कार्ल मार्क्स को '' दास कैपिटल' और तुलसी को ''रामचरितमानस' रचने की प्रेरणा उनके युग उनके समाज से ही तो मिली थी। पत्रकार भी इसी भाँति अपनी पत्रकारिता में जीवन की समाज की राष्ट्र की तथा उससे भी आगे बढ़कर तत्कालीन जनमुद्दों को अपने लेखन का विषय बनाता आया है।

वर्तमान समय में पत्रकारिता एक स्वतन्त्र व्यवसाय का रूपधारण कर चुका है, इस कारण अब विशुद्ध पत्रकारिता के लिए व्यक्ति का साहित्यकार होना आवश्यक नहीं रहा है किन्तु हिन्दी भाषी पत्रिकारिता में जो एक युग रहा उसमें पत्रकार होने के साथ–साथ व्यक्ति साहित्यकार भी रहा है जैसे :–

1. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
2. बालकृष्ण भट्ट
3. प्रताप नारायण मिश्र
4. सुमित्रानन्दन पन्त
5. महावीर प्रसाद द्विवेदी
6. अज्ञेय

आधुनिक हिन्दी भाषी प्रदेशों में त्रिपथा (उत्तरप्रदेश) मधुमती एवं स्वरमंगला (राजस्थान) मनुष्यमानस (महाराष्ट्र) दूर्वा (मध्यप्रदेश) के साथ सरस्वती, साहित्य सन्देश, आलोचना जैसी प्रसिद्ध पत्रिकाऐं भी रही है। इनमें से ही एक विशिष्ट पत्रकार हेतु भारद्वाज रहे हैं जिन्होंने 1960 से नियमित पत्रकारिता लेखन कर अपनी लेखनी की उत्कृष्टता सिद्ध की है, हेतु जी द्वारा सम्पादित पत्रिकाएं :–

1. आज की कविता
2. तटस्थ
3. मधुमती
4. समय माजरा
5. अक्सर

पंचशील शोध समीक्षा–विशेष प्रसिद्ध रही है। साहित्यकार जब–जब भी पत्रकार के कर्त्तव्य का भी निर्वहन करता है तो उसकी लेखनी तीक्ष्ण प्रहार तथा आदमी की पीर को उकेरती है, हेतु भारद्वाज ने भी अपनी लेखनी द्वारा प्रगतिवादी मूल्यों को खूब उकेरा है किन्तु कुछ परम्परागत तथा बहुत कुछ नये ढंग से।

गरीबों के प्रति सहानुभूति, आदर्श समाजीकरण, समानता, दलित विमर्श, स्त्री विमर्श, मानव का अवमूल्यन करने वाली प्रथाओं का विरोध, नवीन सामाजिक संरचना के साथ–साथ सांस्कृतिक मूल्यों के घटन पर चिन्ता, राष्ट्रीय अस्मिता प्रति संवेदना, साहित्यिक–सांस्कृतिक विषयों पर चर्चाऐं, ईमानदारीपूर्वक पत्रकार कर्म का निर्वहन इनका मुख्य प्रगतिवादी दृष्टिकोण रहा है।

''भटकन गयी न मेरे मन की
मूल निर्मिति में खोटापन, है पहचान अपन की
खरी–खरी कहनौ नहिं छोड्यों, भीड़ बढ़ी दुश्मन की
मुँह देखी कहनों नहिं आयौ, चिंता नहीं अनबन की
लाभ–लोभ की राह न पकरी, रही टेब बचपन की
पढ़ि–पढ़ि पोथी जनम गँवायौ, आस करी नहीं धन की
राजी रह्यौ न कोई मोते, सही बात जन–जन की
पीर पराई पी–पी हार्यौ, प्यास बुँझी अँसुअन की
हँस–हँस सही धनेरी लानत, परवा करी न तन की
सीख्यौ जोग न जुगती जानी, लाज बचायी पन की
स्वाभिमान की कीमत देकें, चाही जीत न रन की
जितना पायौ, सब कुछ पायौ, रही भावना मन की
ना कोई अफसोस सत्तावै, खुशी मिली जीवन की
साँचों प्रेम नहीं मिलि पायौ, धानी खाक बनन की
हेतु! विधि विग्रह की देखो सड़ियल कथा भ्रमन की

मुंशी प्रेमचन्द की जयन्ती पर 2006 में हेतु भारद्वाज द्वारा जो वक्तव्य दिया गया कि 'साहित्यकार की कलम समाज को समर्पित हो 'तथा' 'सत्य–साहित्य की परिभाषा नही बदलती 'के अनुसार श्रीमान् का प्रगतिवादी दृष्टिकोण भली भाँति समझा जा सकता है।

''सत्य और साहित्य की परिभाषा कभी नहीं बदलती, भले ही इनके रूप बदले से दिखाई दे, ज्ञान और मनोरंजन दोनों की आदमी की जरूरत है, साहित्यिक रूप से मनोरंजन दोनों ही आदमी की जरूरत है, साहित्यिक रूप से मनोरंजन को पाना गलत नहीं है किन्तु –

''केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए
उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए''

समय के साथ साहित्य–पत्रकारिता को भी बदलना पड़ता है किन्तु गम्भीर–जनमानस के सम्बन्धित साहित्य तथा जन–पत्रकारिता का वर्तमान में भी महत्व बना हुआ है।

हेतु भारद्वाज की – जमीन से हड़कर
चीफ साहब आ रहे हैं

पटाक्षेप नहीं होगा–पुस्तके विशेष लोकप्रिय रही। हेतु जी ने जब से अपने साहित्यिकरूप को संभाला तभी से वे कविता, कथा, साहित्य तथा पत्रकारिता के नवीन आयामों को लिपिबद्ध करते आये है, प्रसिद्ध साहित्यकारों से विचार–विमर्श हो या साक्षात्कार, इन्होंने अपने प्रगतिवादी मूल्यों का परिचय दिया ही है। हेतु जी की पत्रकारिता का सम्यक् अध्ययन करने के उपरान्त ये तो दृष्टिगत प्रथमतः हो ही जाता है कि इनकी लेखनी मुख्य विषयों पर अधिक चली है जैसे –

1. दलित विमर्श
2. स्त्री विमर्श
3. शोषित पीड़ित संघर्षशील जनता की धड़कनें
4. गम्भीर जनवादी चिन्तन
5. मानवतावादी कथाऐं
6. अम्बेड़कर पर गहन विमर्श

7. राष्ट्रीयता की प्रबल भावना

''काल के कोड़े और दुर्दिन का व्यंग्य सहने धरती पर कौन रहेगा ? कौन अभागा अत्याचारी का अत्याचार, घमण्ड़ियों द्वारा किये गये अपमान, उपेक्षित प्यार का दर्द, न्याय की प्रवंचना–प्रभुवर्ग की घुड़की और अयोग्यों की पूजा बर्दाश्त करने के लिए धरती पर रहेगा?

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

विधि संग्रह :– हेतु भारद्वाज
दैनिक भास्करः– 18 जनवरी 2006
अक्सर (त्रैमासिक पत्रिका 2015)
पंचशील शोध पत्रिका (त्रैमासिक हिन्दी शोध पत्रिका)
आदमी जैसा आदमी :– खतो – किताबत :– हेतु भारद्वाज